बीवीयों की अदला बदली

मेरा नाम सरिता है। मेरे पति दुश्यन्त , एक engineering company में अच्छे पद पर हैं। हम लोग वैसे तो अलाहाबाद (उ. प्र.) के रहने वाले हैं पर पिछले १५ सालों से New Delhi (greater kailash) में रह रहे हैं। दुश्यन्त की उम्र २८ साल की है पर २४ से ज्यादा नहीं दिखते। ५'८" कद है, हल्के से और सुन्दर हैं। मेरी उमर २६ साल है, पर २२ साल की दिखती हुँ, ५'३" कद है, जिस्म ३६-२७-३६ है। हम दोनों यहाँ पर अपने कुछ दोस्तों के साथ बीवीयों को आपस में अदल बदल करके चुदाई करते हैं।

इस बीवीयों की अदला बदली करके चुदाई में दो जोड़े अपने अपने साथी बदल कर एक दुसरे को चोदते हैं, एक की पत्नी दुसरे आदमी के साथ चुदवाती है और उसका पति किसी और की पत्नी को चोदता है। हम नहीं जानते कि यहाँ पर हमारे अलावा और कितने जोड़े ऐसे अपनी अपनी बीवीयों को अदल बदल करके चुदाई करते हैं। मेरे ख्याल से इसके लिये मन तो बहुतों का होता है, और अगर अवसर मिले तो शायद इसका आनन्द भी उठायें। हम लोग फिलहाल अपने ४ नज़दीकी मित्रों के जोड़ों के साथ बीवीयों की अदला बदली करके चुदाई करते हैं और करवाते हैं।

अकसर हम में से दो-तीन जोड़े ही एक साथ हो पाते हैं, पर कभी कभार किसी विशिष्ट अवसर पर, जब सबको समय हो तो हम पांचों मिलते हैं और अदला बदली करके चुदाइ करते हैं। हालाँकि हमारा उद्देष्य एक दुसरे के जीवन साथी के साथ चुदाई का आनंद उठाना होता है, पर इसमें हमारी प्रगाढ़ मित्रता, यानि कि दावतें, पिकनिक, पार्टियाँ, और दुसरे के साथी के साथ हंसी मज़ाक और पार्टियाँ, और दुसरे के साथी के साथ सबके सामने एक दुसरे के कपड़ों के उपर से जो मर्जी आये करके मज़ा लेना भी शामिल हैं। इसके अलावा दुसरे के साथी के साथ अकेले film देखने जाना, बाहर खाना खाना, और फ़िर उसे अपने साथ चुदाई के लिये घर लाना।

जब मेरे पति किसी और की पत्नी के साथ यही सब कर रहे हों, अपने आप में यह बहुत ही रोमांचक है। हम २-३ जोड़े कभी कभी एक साथ दुसरे शहर घुमने जाते हैं तो होता है कि मैं दुसरे के पति के साथ ही अलग कमरे में रहती हुँ, जैसे कि उन दिनों के लिये मेरे पति वही हों।

हमने अपनी इस जिन्दगी की शुरुआत कैसे की अब मैं ये बताना चाहुंगी। मुझे लम्बे अर्से से यह शक था कि दुश्यन्त दुसरी औरतों को चोदने का बहुत इच्छुक था। पर कोइ ५-६ साल पहले उसने कहना शुरु किया कि "सरिता, उम्र बहुत छोटी होती है और हमे यह भी अनुभव करना चाहिये कि दुसरों के साथ चुदाई करने में कैसा मज़ा आता है क्योंकि हम दोनों ने विवाह के पहले किसी से चुदाई नहीं की थी।" वो किसी दुसारी स्त्री के साथ चुदाई का लुफ़्त उठाना चाहता था और मुझे भी उत्साहित करता था कि मैं भी किसी दुसरे मर्द के साथ चुदाई का आनंद उठाउँ।

इन बातों के दौर से हमारी चुदाई में आनंद और बढ़ गया था। जब दोस्तों को अपने घर में बुलाते तो दुश्यन्त किचन में मुझसे आकर बताता कि आज उसे किस दोस्त की बीवी को चोदने का मन कर रहा है। वह मुझसे भी पुछता कि आज मेरा मन किस दोस्त से चुदवाने को कर रहा है। यह सब बातें करके हमे बड़ा मज़ा आने लगा और हम सबके जाने के बाद उस दोस्त और उसकी बीवी का नाम लेके एक दुसरे को चोदने लगते थे। कुछ दिनों तक बिस्तर में चोदते समय इस बारे में बातें करते-करते मेरी भी हिम्मत बढ़ती गयी और मैं दुसरे जोड़े के साथ काल्पनिक अदला बदली चुदाई के लिये तैयार हो गइ।

फिर हमने ढुँढना शुरु किया और हमारी नज़र अन्कित और अमिता पर पड़ी जो हमारे ही पड़ोस में कुछ ही दुर पर रहते थे। इन कुछ सालों में हमारी दोस्ती उनसे काफ़ी गहरी हो गइ थी। ये दोनों भी लगभग हमारी ही उम्र के थे। अन्कित ३० साल का था और अमिता २७ की। अमिता का शरीर बहुत सुन्दर (३४-२६-३८) था। वो काफ़ी sexy थी और नयन-नक्स तिखे थे। हम दोनों उनके स्वभाव और सुन्दरता से काफ़ी प्रभावित थे।

अपनी चुदाई के समय अब हम अन्कित और अमिता के बारे में सोचने लगे और उनके साथ चुदाइ की कल्पना करने लगे। जब भी दुश्यन्त मुझे चोदता था तो मुझसे यही कहता कि मेरी चूत कितनी रसीली और सुन्दर है और मैं बड़ी आसानी से अन्कित को अपने साथ चुदाई करने के लिये पटा सकती हुँ। फिर मैंने भी दुश्यन्त से कहा कि उसका लंड इतना अच्छा है कि अमिता भी उसके लंड का स्वाद लेने के

लिये आसानी से आतुर हो जायेगी। वो मुझसे पुछता कि आज मुझे किसके लंड से चुदवाना है, उसके या अन्कित के।

मैं भी दुश्यन्त से पुछती कि आज उसे किसकी चूत चोदने का मन कर रहा है, मेरी या अमिता कि। दुश्यन्त ने महसुस किया कि मुझे इन बातों से बहुत मज़ा आता है और मैं खुब उत्तेजित होकर दुश्यन्त से चुदवाने लगी थी।

एक दिन तो दुश्यन्त चुदाइ के दौरान मुझसे पुछने लगा, "सरिता, बताओ तो सही, अभी तुम्हारी चूत के अन्दर किसका लंड घुसा है?" मैं भी बिना ज्यादा हिचक के बोली,

"दुश्यन्त , इस समय तो मेरी चूत अन्कित के लंड का मज़ा ले रही है।" जल्द ही मैंने भी दुश्यन्त से पुछा, "दुश्यन्त , तुम्हारा लंड किसकी चूत में है, तो दुश्यन्त बड़े मजे से बोला कि अमिता की चूत मे।" दुश्यन्त ने कुछ कहा नहीं पर यह जरुर महसुस किया कि जब मैं अन्कित के साथ चुदाई की कल्पना करती हुँ, तो मेरा चुदाई में उत्साह और बढ़ जाता है और मैं दुश्यन्त से खुब जोर से चुदवाती हुँ।

फिर एक दिन मैंने उससे कहा कि क्यों नहीं वो मुझे चोदते वक्त यह कल्पना करता है कि वो अमिता को चोद रहा है और चोदते समय मुझे अमिता कहकर ही पुकारे। काफ़ी दिनों तक रोज़ हम लोग इस काल्पनिक दुनिया में एक दुसरे को अन्कित और अमिता के नाम से चोदते रहे, मैं उसे अन्कित पुकारती और वो मुझे अमिता । फिर लगभग आज से ५ साल पहले, एक दिन अचानक अनजाने में ही, अन्कित और अमिता के साथ ये कल्पना हकीकत में बदल गइ।

एक दिन अन्कित और अमिता ने हमे रात को dinner पर बुलाया। हम उनके घर गये और वहाँ दुश्यन्त और अन्कित ने साथ बैठकर थोड़ी whiskey पी। मैंने और अमिता ने भी थोड़ी सी ली। तभी एकाएक अन्कित ब्लु films के बारे में बात करने लगा, चुँकि उसे भी पता था कि हम दोनों ऐसी picture अकसर देखा करते थे। अन्कित ने दुश्यन्त से पुछा कि क्या उसने कभी कोइ indian blue film देखी है? उसने कहा ऐसी film देखने में बड़ा मज़ा आयेगा। दुश्यन्त ने अन्कित को बताया कि ऐसी films अब

धीरे धीरे सभी जगह पर मिलती हैं और हमने कुछ देखी भी हैं।

ये ज्यादा मज़ेदर होती हैं क्युंकि साड़ी और पेटिकोट उठा कर भारतीय औरतों को अलग अलग लोगों से अपनी चूत चुदवाते देखने में अलग ही आनंद आता है। जब भारतीय औरतें अपना सुन्दर सा मुँह खोल कर किसी का लंड चुसती है तो अपना लंड तो खड़ा हो जाता है। दुश्यन्त ने अन्कित को बताया कि उसके car में एक video cd पड़ी है जो हम वापस लौटाने वाले थे। उसने कहा कि अगर अन्कित चाहे तो उसे वापस करने के पहले देख सकता है।

क्योंकि अमिता ने भी कभी भारतीय blue film नही देखी थी अन्कित ने उसे सुझाव दिया कि वे दोनों उसे अपने bedroom में देख लेंगे और हमारी वापसी पर लौटा देंगे। दुश्यन्त ने उन्हे उत्साहित करते हुए कहा कि हम दोनों तब तक कोइ दुसरी हिन्दी film वहीं drawing room में देखेंगे। पर अन्कित ने कहा कि ये तो बदतमीज़ी होगी और चुंकि हम सब adult हैं, हम सब को blue film का आनंद एक साथ उठाना चाहिये। हालाँकि दुश्यन्त और मुझे इसमे कोइ इतराज़ नही था पर अमिता कुछ सम्सया में लग रही थी।

उसके बाद अमिता के साथ मैं रसोइ में गइ और उसे हिम्मत दी कि नज़दीकी दोस्तों के साथ ऐसी film देखने में कोइ हर्ज़ नहीं है। हम रसोइ से कुछ और समोसे और drinks लेकर आये। कुछ समय बाद अमिता ने हल्के से कहा कि उसे भी वह film देखने में कोइ ऐतराज़ नहीं है। दुश्यन्त बाहर जाकर car से cd निकाल लाया जिसका नाम 'Bombay Fantasy' था।

हम सब उनके bedroom में चले गये। मैं और दुश्यन्त सोफ़े पर बैठ गये और अन्कित और अमिता अपने बिस्तर पर। अन्कित ने light बन्द करके film चालु कर दी। हम लोगों ने ये film देखी हुइ थी जिसमें दो मर्दों और दो औरतों की एक ही बिस्तर पर चुदाई की कहानी थी। हम शांति से सोफ़े पर बैठ कर अन्कित और अमिता के भाव पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। कमरे में TV की रोशनी के अलावा अन्धेरा था। कुछ देर में हमे लगा कि अन्कित और अमिता गरम हो रहे थे और उन्होंने अपने आप को कम्बल से ढक लिया था।

ऐसा लग रहा था कि जैसे अन्कित अमिता के साथ चुदाई से पुर्व की हरकतों में मशगुल हो गया था। ये देख कर दुश्यन्त भी गरम हो गया और मुझे चूमने लगा और मेरी चुचियों से खेलने लगा। अब अन्कित और अमिता अपने आप में इतने व्यस्त थे कि उनका ध्यान हमारी ओर नही था। यह जान मैंने भी दुश्यन्त के लंड को हाथों में लेकर दबाना शुरु कर दिया। दुश्यन्त ने भी अपना हाथ मेरी चूत पर रख दिया, और हम भी अन्कित और अमिता के बीच चल रहे सम्भावित खेल में शामिल हो गये।

अचानक दुश्यन्त ने देखा कि अन्कित और अमिता के ऊपर से कम्बल एक ओर सरक गया था और उसकी नज़र अन्कित के नंगे चूतड़ों पर पड़ी अमिता की साड़ी उतर चुकी थी और अन्कित अमिता के उपर चढ़ा हुआ था। वे दोनों पूरी तरह चुदाइ में लग गये थे। अन्कित अपना ८" का खड़ा लंड अमिता की चूत में घुसेड़ चुका था और अपने हाथों से अमिता की चुचियों को मसल रहा था।

यह देख कर दुश्यन्त ने कहा कि वो भी मुझे चोदना चाहता है और ये कह कर दुश्यन्त मेरी दोनों चुचियों को पकड़ कर कस कस कर दबाने लगा। पर मैं शर्मा रही थी क्योंकि अन्कित और अमिता की तरह हमारे पास हमारे नंगे बदन को ढकने के लिये कुछ नही था। पर थोड़ी ही देर में मैं भी चुदाइ की चलती हुइ film, अपनी चुची की मसलाई और अन्कित और अमिता की खुली चुदाइ से काफ़ी गरम हो गइ और दुश्यन्त से मैं भी अपनी चूत चुदवाने के लिये तड़पने लगी।

अब अन्कित और अमिता के ऊपर पड़ा हुआ कम्बल बस नाम मात्र को ही उनके नंगे बदन को ढक रहा था। अमिता की नंगी चुची और उसका पेट और नंगी जाँघें साफ़ साफ़ दिख रही थीं। अन्कित इस समय अमिता के ऊपर चढ़ा हुआ था और अपनी कमर उठा उठा कर प्रिये की चूत में अपना ८" का लंड पेल रहा था और अमिता भी अपनी पतली कमर उठा उठा कर अन्कित के हर धक्के को अपनी चूत में ले रही थी और धीरे धीरे बड़बड़ा रही थी जैसे,

हाइइइइ, और जोओओओर सेएएए चोदोओओओओओ, बहुउउउउउउउउउत

मज़्ज़्ज़्ज़ाज़्ज़्ज़्ज़ा आ रहाआआ हैएए। ये देख कए मेरी चूत गीली हो गयी और मैं भी दुश्यन्त से वहीं सोफ़े पर चुदवाने को राज़ी हो गइ। मेरी रज़ामन्दी पा कर दुश्यन्त मुझपर टुट पड़ा और मेरी दोनों चुचियों को लेकर पागलों की तरह उन्हे मसलने और चुसने लगा। मैं भी दुश्यन्त का तना हुआ लंड पकड़ कर सहलाने लगी। जब मैंने देखा कि दुश्यन्त का लंड कुछ ज्यादा ही अकड़ा हुआ है तो उसके और मेरे कपड़े उतारने लगी। कुछ ही देर में हम दोनों सोफ़े पर अन्कित और अमिता की तरह नंगे हो चुके थे।

TV की धुन्धली रोशनी में भी इतना तो साफ़ दिख रहा था कि कम्बल अब पुरी तरह से हट चुका था और अन्कित खुले बिस्तर पर हमारे सामने ही अमिता को जमकर चोद रहा था और अमिता भी अपने चारों तरफ़ से बेखबर हो कर अपनी कमर उठा उठा कर अपनी चूत चुदवा रही थी।

अन्कित और अमिता की खुल्लम खुल्ला चुदाइ देख कर मैं भी अब बहुत गरम हो चुकी थी और दुश्यन्त से बोली कि अब जल्दी से तुम मुझे भी अन्कित की तरह चोदो, मैं अपनी चूत की खुजली से मरी जा रही हुँ। मेरी बात खतम होने से पहले ही दुश्यन्त का तनतनाया हुआ लौड़ा मेरी चूत में एक जोरदार धक्के के साथ दाखिल हो गया। दुश्यन्त अपने लंड से इतने जोर से मेरी मारा कि मेरे मुँह से एक जोरदार चीख निकल गयी। मैं तो इतनी जोर से चीखी जैसे कि उसका लंड मेरी चूत के अन्दर पहली बार गया हो! एकाएक पुरा माहौल ही बदल गया। मेरी चीख से अन्कित और अमिता को भी पता लग गया था कि हम दोनों भी उसी कमरे में हैं और अपनी चुदाइ में लग चुके हैं।

ये हमारे जीवन के एक नये अध्याय की शुरुआत थी जिसने कि हमे अदला बदली करके चुदाई के आनंद का रास्ता दिखाया। मेरी चीख सुनकर अमिता अन्कित का लंड अपनी चूत में लेते हुए धीरे से बोली, "लगता है कि दुश्यन्त और सरिता ने भी अपनी चुदाइ शुरु कर दी है।" ये सुनकर अन्कित ने आवाज़ दी, "क्या दुश्यन्त , क्या चल रहा है? क्या तुम और सरिता भी वही कर रहे हो जो हम और अमिता कर रहे हैं?" दुश्यन्त ने जवाब दिया,

"क्यो नहीं, तुम दोनों का live show देख कर कौन अपने आप को रोक सकता है। इसीलिये मैं और सरिता भी वही कर रहे हैं जो इस वक्त तुम और अमिता कर रहे हो।"

अन्कित बोला, "अगर हम लोग सभी एक ही काम कर रहे हैं तो फ़िर एक दुसरे से क्या छिपाना और क्या पड़दा? खुले मंच पर आ जाओ, दुश्यन्त। आओ हमलोग एक ही पलंग पर अपनी अपनी बीवीयों को चित्त लेटा कर उनकी टांगे उठा कर उनकी चूतों की बखिया उधेड़ते है।" दुश्यन्त ने पुछा,

"तुम्हार क्या मतलब है, अन्कित?"

"मेरा मतलब है कि तुम लोगों को सोफ़े पर चुदाइ करने में मुश्किल हो रही होगी, क्यों न यहीं पलंग पर आ जाते हमारे पास, आराम रहेगा और ठीक तरीके से सरिता की चूत में अपना लंड पेल सकोगे, मतलब सरिता को चोद सकोगे।" सच्ची बात तो ये थी कि हम वाकइ सोफ़े पर बड़ी विचित्र स्थिति में थे। दुश्यन्त ने मुझसे पुछा कि क्या मुझे पलंग पर जाने में और अमिता के बगल में लेट कर चूत चुदवाने में कोइ आपत्ति है?

मैंने कहा, "नही।" मैं उन दोनों की चुदाइ देख कर काफ़ी चुदासी हो उठी थी और उनकी चुदाई को नज़दीक से देखना चाह रही थी। TV की धीमी रोशनी में मैं ये सोच रही थी कि एक ही पलंग पर लेट करके अमिता के साथ साथ चूत चुदवाने में कोइ परेशानी तो नही, पर मुझे आने वाली घटना का अंदेशा नही था। दुश्यन्त ने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और पलंग की ओर चल पड़ा जँहा अन्कित और अमिता चुदाइ में लगे थे।

हमे आता देख अन्कित ने अपनी चुदाइ को रोक कर हमारे बिस्तर पर आने का इन्तज़ार करने लगा। अन्कित ने अमिता की चुदाइ तो रोक लिया था लेकिन अपना लंड अमिता की चूत से नही निकाला था, वो अभी भी अमिता की चूत में जड़ तक घुसा हुआ था और अन्कित और अमिता की झांटे एक दुसरे से मिली हुई थी। दुश्यन्त ने पलंग के नज़दीक पहुंच कर मुझे अमिता के पास चित्त हो कर लेटने को कहा।

जैसे ही मैं अमिता के बगल में चित्त हो कर लेटी, अन्कित मुझे छोड़ कर उठा और कमरे की light जलाकर वापस बिस्तर पर आ गया। हम लोगों को एकाएक सारा का सारा माहौल बदला हुआ नज़र आने लगा। हम चारों एक ही पलंग पर चमकती रोशनी में सरे-आम नंग-धड़ंग चुदाइ में लगे हुए थे। अन्कित और अमिता बिना कपड़ों के काफ़ी सुन्दर लग रहे थे।

अमिता की चुचियाँ छोटी छोटी थीं पर चुतड़ काफ़ी बड़े थे। उसकी छोटी छोटी झांटे बड़ी सफ़ाइ से उसकी सुन्दर चूत को ढके हुए थी। कमरे की हल्की रोशनी में अमिता की चूत जो कि इस समय अन्कित के लंड से चुद रही थी काफ़ी खुली खुली सी लग रही थी। कमरे की चमकती रोशनी में अन्कित के खड़े लंड को अमिता की चूत के रस से चमचमाते हुए देखा। उसका लंड दुश्यन्त से थोड़ा लम्बा रहा होगा, पर दुश्यन्त का लंड उससे कहीं ज्यादा मोटा था। दुश्यन्त भी अमिता को नंगा देख कर बहुत खुश था।

मुझे याद आया कि दुश्यन्त को हमेशा छोटे मम्मों और बड़े चुतड़ों वाली औरतें पसन्द थीं। मैंने अन्कित को अपने नंगे जिस्म को भारी नज़रों से आँकता पाया और उसे शर्तिया मेरे भारी मम्मे और गोल गोल भरे भरे चुतड़ भा गये थे। अन्कित ने बिस्तर पर आकर अमिता की खुली जाँघों के बीच झुकते हुए अपना लंड उसकी गीली चूत से फिर से भिड़ा दिया। अमिता भी जैसे ही अन्कित का लंड अपनी चूत के मुँह में पायी तो झट से अपनी टाँगों को ऊपर उठा दी और घुटने से अपने पैरों को पकड़ लिया।

अब अमिता की चूत बिल्कुल खुल गयी और अन्कित ने एक जोर दार झटके के साथ अपना लंड अमिता की चूत में डाल दिया। ये देख दुश्यन्त ने भी अपना लंड अपने हाथ से पकड़ कर मेरी चूत के छेद से लगाया और एक झटके के साथ मेरी चूत के अन्दर घुसेड़ कर मुझे चोदने लगा। अन्कित हालाँकि अमिता को बहुत जोर से चोद रहा था पर उसकी नज़र मेरी चूत पर टिकी हुइ थी। दुश्यन्त का भी यही हाल था और उसकी नज़र अमिता की चुदती हुइ चूत पर से हट नहीं पा रही थी।

मुझे अन्कित और अमिता के साथ साथ चुदाइ करवाने में बहुत मज़ा आ रहा था

और अब मैं भी गर्मा कर अपनी कमर उचका उचका कर दुश्यन्त का लंड अपनी चूत में डलवा रही थी और मेरे बगल में अमिता भी अपनी टांगों को उठा कर के अन्कित का लंड अपनी चूत से खा रही थी। पलंग पर चढ़े लोगों के लिये जगह कम थी और हमारे जिस्म एक दुसरे से टकरा रहे थे।

अमिता का पैर मेरे पैर से और दुश्यन्त की जाँघ अन्कित के जाँघ से छु रही थी। थोड़ी देर तक मैं अपनी चूत चुदवाते हुए अमिता को देख रही थी और थोड़ी देर के बाद मैंने अपना हाथ आगे बढ़ा कर अमिता का हाथ पकड़ लिया। अमिता ने खुशी का इज़हार करते हुए मेरे हाथ को दबाया और अपनी कमर उचकाते हुए मेरी तरफ़ देख कर मुसकुराई।

यह देख अन्कित ने अपना हाथ बढ़ा कर मेरे पेट पर मेरी चूत से थोड़ा उपर रख दिया। मुझे अन्कित का हाथ अपने पेट पर बहुत अच्छा लगा और मैंने अन्कित से कुछ नहीं कहा। अन्कित की हरकत देख कर दुश्यन्त ने भी अपना हाथ अमिता की जाँघ पर उसकी चूत के पास रख दिया और अमिता की जाँघो को हल्के हल्के से सहलाने और दबाने लगा। अन्कित और दुश्यन्त की इन हरकतों से हम सब में एक नयी तरह की चुदास भर गयी और दोनों मर्द हम दोनों औरतों को जोर जोर से चोदने लगे।

अचानक दुश्यन्त को हमारा वो वार्तालाप याद आया जिसमे हमने किसी दुसरे जोड़े के साथ चुदाइ की कल्पना की थी। दुश्यन्त ने मुझसे पुछा, "सरिता क्या तुम आज किसी नयी चीज़ का आनंद उठाना चाहोगी?" मैं दुश्यन्त से पुछी, "तुम्हारा क्या मतलब है दुश्यन्त ? तुम और किस नये आनंद की बात कर रहे हो? अभी तो मुझको अमिता के साथ उसके पलंग पर लेट कर तुमसे अपनी चूत चुदवाने में बहुत आनंद मिल रहा है।"

तब दुश्यन्त मुसकुराते हुए मेरी चुचियों को अपने हाथों से मसलते हुए बोला, "आज अन्कित से चुदवाने का मज़ा लेने के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?" मैं और दुश्यन्त कल्पना में अन्कित और अमिता के साथ इतनी बार एक दुसरे को चोद चुके थे कि ये सब बातें मेरे लिये नइ नही थीं। इसलिये मैं दुश्यन्त से बोली,

"दुश्यन्त , आज मेरी चूत इतनी गर्म हो चुकी है कि मुझे इससे कोइ फ़र्क नही पड़ता कि आज मुझे कौन चोदता है, तुम या अन्कित । बस मुझे अपनी चूत में कोइ न कोइ लंड की ठोकर चाहिये और वो लंड इतनी ठोकर मारे कि मैं जल्दी से झड़ जाऊं। इस समय मैं अपनी चूत की खुजली से बहुत परेशान हुँ।" यह सुनते ही दुश्यन्त ने अन्कित की ओर मुड़ कर कहा,

"अन्कित , क्या तुम आज एक नये आनंद के लिये सरिता की चूत में अपना लंड डालना चाहोगे? क्या तुम आज सरिता को चोदना चाहोगे?" दुश्यन्त की बात सुन कर अन्कित ने चाहा कि झटपट अमिता की चूत में चढ़ कस कस कर धक्के मारे और खुशी से बोला, "ज़रुर दुश्यन्त , पर अगर अमिता भी एक नये आनंद के लिये तुम से अपनी चूत चुदवाना चाहती है तो।"

जब मैंने देखा कि अन्कित और दुश्यन्त अपनी अपनी बीवीयों को दुसरे से चुदवाना चाहते हैं तो फ़िर मैंने हिम्मत करके अमिता से पुछा, "अमिता , क्या तुम भी एक नया आनंद लेना चाहती हो, दुश्यन्त का लंड अपनी चूत में डलवा करके उससे चुदवाना चाहती हो?" अमिता थोड़ी देर तक सोचने के बाद अन्कित के गले में अपनी बाहें डाल कर और उसके सीने से अपनी चुचियों को रगड़ते हुए बोली,

"क्यों नहीं! अगर दुसरे मर्द के साथ सरिता अपनी चूत चुदवा सकती है और ये सरिता के लिये ठीक है तो मुझे क्यों फ़र्क पड़ना चहिये? मैं भी दुश्यन्त के लंड से अपनी चूत चुदवाना चाहती हुँ और ये भी देखना चाहती हुँ कि अन्कित का लंड कैसे सरिता की चूत में घुसता और निकलता है और कैसे सरिता अपनी चूत अन्कित से चुदवाती है।

आज मैं भी सरिता की तरह छिनाल बनना चाहती हुँ और किसी दुसरे मर्द का लंड अपनी चूत में पिलवाना चाहती हुँ।" और यही हम लोगो कि अदला बदली चुदाई का अगज़ था। अमिता की बातों को सुनकर अन्कित ने अपना लंड अमिता की चूत से बाहर खींच लिया और दुश्यन्त से बोला, "चल अब हम अपनी अपनी बीवीयाँ बदल कर उनकी चूत को चोद चोद कर उनका भोसड़ा बनाते हैं।" अन्कित की बात सुनकर

दुश्यन्त ने भी अपना लंड मेरी चूत में से निकाला और अमिता की ओर बढ़ गया।

अन्कित भी अपने हाथ से अपना लंड पकड़ कर मेरे पास आया। अन्कित मेरे पास आकर मेरी जांघों के बीच झुकते हुए उसने पहले मेरी चूत पर एक जोरदार चुम्मा दिया और फिर अपना लंड मेरी कुलबुलाती हुइ चूत में लगाया और एक धक्के के साथ अपना लंड मेरी चूत के अन्दर घुसेड़ दिया। मैंने भी अपनी कमर उचका कर अन्कित का पुरा का पुरा लंड अपनी चूत में डलावा लिया। फिर मैं अपनी चूत में अन्कित का लंड लेती हुइ दुश्यन्त को भी अमिता की चूत में अपना लंड घुसा कर अमिता की चुदाइ शुरु करते हुए देखी। दुश्यन्त और अमिता दोनों बड़े जोश के साथ एक दुसरे को चोद रहे थे।

जितनी तेज़ी से दुश्यन्त अपना लंड अमिता की चूत में घुसेड़ता उतनी ही तेज़ी से अमिता भी अपनी कमर उचका कर दुश्यन्त का लंड अपनी चूत में ले रही थी। मैं एक नया लंड अपनी चूत में डलवा कर बहुत खुश थी और खूब मज़े से अन्कित का लंड अपनी चूत में पिलवा रही थी। अन्कित का लम्बा लंड मेरी चूत के खूब अन्दर तक जा रहा था और मुझे अन्कित की चुदाइ से बहुत मज़ा मिल रहा था। अन्कित भी मेरी चुचियों को अपने दोनों हाथों से मसलते हुए मुझे चोद रहा था।

मैं बार बार दुश्यन्त के मोटे लंड को अमिता की चूत में जाता हुआ देख रही थी। दुश्यन्त भी मेरी चूत को अन्कित के लंड से चुदते हुए बिना परेशानी के देख रहा था। अमिता भी दुश्यन्त के लंड को मेरी चूत में अन्दर बाहर होते देख रही थी और अन्कित सिर्फ़ मेरी बिना झांटों वाली चिकनी चूत को देख कर उसे चोदने में पुरा ध्यान लगाये हुए था। इस समय मुझे लगा कि दुनिया में अपने पति को अपनी सबसे चहेती सहेली को चोदते हुए देखने का सुख अपराम्पार है।

तब जबकि मैं खुद भी उसी बिस्तर पर उस सहेली के पति से सबके सामने खुल्लम खुल्ला चुदवा रही हुँ। कमरे में सिर्फ़ हमारी चुदाइ की आवाज़ गुन्ज रही थी। अमिता अपनी चूत में दुश्यन्त का लंड पिलवाते हुए हर धक्के के साथ ओह्ह! ओह्ह! अह्ह! अह्ह! कर रही थी और बोल रही थी, "हाय दुश्यन्त क्या मस्त चोद रहे हो, और जोर जोर से चोदो मुझे, बहुत दिनों के बाद आज मेरी कायदे से चुद रही है। हाय क्या

लंड है तुम्हारा।

मेरी चूत लग रही है आज फट ही जायेगी। तुम रुकना मत, मुझे आज खूब चोदो। चोद चोद कर मेरी चूत का भोसड़ा बना दो।" दुश्यन्त भी अमिता की चुची दबाते हुए अपनी कमर उठा उठा कर हचक हचक कर अमिता को चोद रहा था और बोल रहा था,

"हाय मेरी चुद्दकड़ रानी, आज तक तु अन्कित का लंड खायी है, आज तुझे मैं अपने लंड से चोद चोद कर तेरी चूत का बाजा बजा दुंगा। आज तेरी चूत की खैर नही।" इधर अन्कित मेरी चूत चोदते हुए बोल रहा था, "हाय मेरी जान, तुम इतने दिन क्यों नही चुदवाई मुझसे। आज तेरी चूत देख मैं कैसे चोदता हुँ। तेरी चूत मेरे लंड के लिये बनी हुई है। आज के बाद तु सिर्फ़ मुझसे चुदवायेगी। ले ले मेरे लंड की रानी ले मेरे लंड की ठोकर खा अपनी चूत के अन्दर। मज़ा आ रहा कि नही मेरी जान, बोल न बोल, कुछ तो बोल।" पुरे कमरे में बस पक, पक, पकत पकत की आवाज़ गुन्ज रही थी।

तभी अचानक अन्कित ने मुझे चोदना बन्द कर दिया और अपना लंड मेरी चूत से निकाल कर मुझे पलंग पर से उठने के लिये कहा। जैसे ही मैं पलंग से उठी अन्कित झट मेरी जगह पर लेट गया और मुझे अपने ऊपर खींच कर मुझे उसके ऊपर चढ़ कर चोदने के लिये कहा।

मैं तो गरम थी ही और इसलिये मैं अन्कित के कमर के दोनों तरफ़ अपने घुटनों को रख अन्कित के लंड को अपने हाथों से पकड़ करके उसके सुपाड़े पर एक चुम्मा दिया और अन्कित के ऊपर चढ़ गयी और अपने हाथों से अन्कित का लंड पकड़ करके अपनी चूत के छेद से भिड़ा दिया। अन्कित ने भी नीचे से मेरी दोनों चुचियों को अपने हाथों से पकड़ कर उनको दबाते हुए नीचे अपनी कमर उठा करके अपना लंड मेरी चूत के अन्दर डाल दिया।

मैं अन्कित के ऊपर बैठ कर उसके लंड को अपने चूत में लेती हुई मुड़ कर देखी कि दुश्यन्त ने भी अमिता की चूत मारने का आसन बदल लिया है और उसने अब

अमिता को घोड़ी बना करके उकड़ू होने के लिये कहा। उसके बाद दुश्यन्त ने अमिता के बड़े चुतड़ों को पकड़ कर उसे पीछे से चोदना शुरु कर दिया। अमिता घोड़ी बन कर दुश्यन्त के धक्कों का जवाब देने लगी और मैं भी अन्कित के ऊपर से उसको तेजी से चोदने लगी।

थोड़ी ही देर में हम चारों एक साथ झड़ गये। झड़ते समय अन्कित ने मुझे अपने से चिपका लिया और अपना लंड जड़ तक मेरी चूत में घुसेड़ कर अपना पुरा का पुरा माल मेरी चूत के गहराइ में छोड़ दिया। उधर दुश्यन्त भी अमिता को अपने से चिपका कर अमिता की चूत अपने लंड के पानी से भर दी। झड़ते वक्त मैंने और अमिता ने अपने हाथों से अन्कित और दुश्यन्त को अपने से सटा लिया था और जैसे ही चूत के अन्दर लंड का फ़ौंवारा छुटा चूत ने भी अपने अपने फ़ौंवारे छोड़ दिये।

अपनी इस पहली अदला बदली चुदाइ के बाद हम सब बहुत थक गये और थोड़ी देर तक अपनी जगह पर लेट कर और बैठ करके सुस्ता लिये। अन्कित अपना लंड मेरी चूत से बिना निकाले मेरे ऊपर ही पड़ा रहा और अपने हाथों से मेरी चुचियों से खेलता रहा और कभी कभी मेरे होंठों पर चुम्मा दे रहा था मैं भी अन्कित को चुम्मा दे रही थी। उधर दुश्यन्त भी अमिता की चूत से अपना लंड बिना निकाले उसकी चुचियों को चूस रहा था।

थोड़ी देर के बाद जब साँस थोड़ी सी ठीक हुई तब हमलोग बिना कपड़े पहने नंगे ही drawing room में आये। कमरे में आकर अन्कित ने मुझे अपनी बाहों में ले लिया और मेरे चुचियों से खेलने लगा। उधर दुश्यन्त ने अमिता को पीछे से पकड़ा और अपना झड़ा हुआ लंड उसके नंगे चूतड़ों से रगड़ने लगा। मैं और अमिता दोनों अन्कित और दुश्यन्त की नंगी गोद में बैठ कर अपने अपने हाथों को पीछे करके उनके लंड को सहलाने लगे।

तभी अन्कित ने अमिता से एक ग्लास पानी मांगा। तब अमिता नंगी ही किचन की तरफ़ चल दी और दुश्यन्त भी अमिता के पीछे पीछे किचन की तरफ़ चल दिया। अन्कित एक सोफ़े पर बैठ गया और मुझे खींच कर अपनी गोद में बिठा लिया। मेरे

नंगे चूतड़ उसके लम्बे लंड से छू रहे थे। दुश्यन्त और अमिता किचन से drinks और खाने का सामान लेकर वापस आये। दुश्यन्त ने भी अमिता को अपनी गोद में अपने लंड पर बिठा लिया और उसके चूतड़ों से खेलने लगा। इस तरह से दोनों लोग एक दुसरे की पत्नियों के नंगे बदन से जी भर के खेलने लगे।

अचानक दुश्यन्त ने अन्कित से पुछा "अन्कित , बताओ तुमको सरिता कैसी लगी, खास कर उसकी चूत तुम्हे पसन्द आयी कि नहीं?" अन्कित ने उत्तर दिया "क्या बात करते हो दुश्यन्त , सरिता को चोदने में तो मज़ा आ गया। क्या चुदवाती है अपने चुतड़ उठा उठा कर। और सबसे मज़ा सरिता की चुची मसलने में है, क्या मस्त चुची है सरिता की। कबसे मैं ऐसी मस्त भारी भारी चुचियों वाली औरत को चोदने के चक्कर में था। पर तुम बताओ कि तुम्हे अमिता को चोदने में कैसा मज़ा आया।" दुश्यन्त बोला

"यार अन्कित , मुझे भी अमिता की कसी हुइ चूत चोदने में बड़ा मज़ा आया। मेरा लंड अमिता की चूत में फंसा फंसा घुस रहा था। अमिता जब अपनी टांग उठा कर अपनी चूत में मेरा लंड पिलवा रही थी तब मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। मैं भी बहुत दिनों से एक छोटी छोटी चुचियों और बड़े बड़े चुतड़ों वाली औरत को चोदने के सपने देख रहा था। चाहो तो सरिता से पुछ लो।" मैंने कहा

"हाँ दुश्यन्त को तो बस अमिता जैसी बीवी चाहिये थी। दुश्यन्त अपने औरत को उलटा लिटा करके पीछे से चूत में चोदना पसन्द करता है और साथ ही साथ उसके भारी भारी चुतड़ों से खेलना पसन्द करता है।" यह सुन कर अमिता बोली "अच्छा तो दुश्यन्त को मेरे जैसी और अन्कित को सरिता जैसी बीवी चाहिये थी फ़िर हम क्यों न एक दुसरे से जीवन भर के लिये पति और पत्नी को बदल लें? वैसे मुझे भी दुश्यन्त के लंड की चुदाइ बहुत अच्छी लगी। चूत चुदवाते वक्त लग रहा था कि मेरी चूत पुरी की पुरी भर गयी है।" दुश्यन्त तब झुक कर अमिता की होंठों को चूमते हुआ बोला, "अमिता thanks for the compliments। वैसे सारी उम्र का तो मैं नही जानता, पर मैं सरिता को अमिता से बदलने के लिये हमेशा तैयार हुँ। मुझे अमिता की चूत में लंड पेलना बहुत अच्छा लगा।"

यह सुन कर अन्कित बोला, "यार दुश्यन्त , क्या बात है। तुने तो मेरे मन की बात कह डाली। तुम भी जब चाहो अमिता के साथ मज़ा ले सकते हो, उसकी चूत चाट सकते हो, उसकी चूत चोद सकते हो, चाहो तो तुम अमिता की गांड में अपना लंड भी घुसेड़ सकते हो। दुश्यन्त, कल शनिवार है और अगर तुम चाहो तो सरिता को मेरे पास ही कल तक रहने दो और तुम सरिता की जगह अमिता को अपने साथ घर ले जाओ।"

दुश्यन्त ने उत्तर दिया, "अन्कित , इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है। मैं सरिता को तुम्हारे पास छोड़ जाता हुँ और तुम अमिता को कल शाम को आकर ले जाना। लेकिन पहले हमलोगों को अमिता और सरिता से भी पूछ लेना चाहिये की उनकी क्या राय है। क्या वो अपने पति के गैर मौजुदगी में किसी और का लंड अपनी चूत में पिलवाना चाहेंगी की नहीं?"

दुश्यन्त की बात सुन कर अमिता सबसे पहले बोली, "सरिता की बात तो मैं जानती नहीं, लेकिन मुझे जब नंगी करके अन्कित के सामने एक बार दुश्यन्त चोद चुका है तो मुझे अब कोइ फ़रक नही पड़ता की दुश्यन्त दोबारा मुझे अन्कित की गैर मौजुदगी में चोदता या अन्कित के सामने चोदता। मुझे तो इस समय बस दुश्यन्त की चुदाइ की खुमारी चढ़ी हुई है और मैं फ़िर से दुश्यन्त का लंड अपनी चूत में पिलवाना चाहती हुँ।" अमिता की बातों को सुन कर मैं भी तब अन्कित के लंड को अपने हाथों से मरोड़ते हुए बोली,

"हाय मेरी छिनाल अमिता रानी, तु एक बार दुश्यन्त का लंड खा कर ही उस पर फ़िदा हो गयी? कोइ बात नहीं, जा मैंने आज और कल तक के लिये तुझे दुश्यन्त का लंड उधारी में दिया। जा तु अपनी चूत मेरे प्यारे दुश्यन्त के लंड से चुदवा या अपनी गांड मरवा। मैं आज रात तेरे पति के लंड से अपना काम चला लुंगी।

वैसे अमिता मेरी जान, तेरा ठोकु खूब कस कर ठोकता है अपना लंड। मुझे तो मज़ा आ गया और तुम लोगों के जाने बाद मैं तो अन्कित से फिर अपनी चूत में उसका लंड ठुकवाउंगी।" अमिता और मेरी बातों को सुन कर अन्कित और दुश्यन्त बहुत खुश हो गये और हमलोगों को ढेर सारी चुम्मियाँ दीं और चुचियाँ मसलीं।

फ़िर दुश्यन्त अमिता को मेरे कपड़े पहना कर अपने साथ ले गया और मुझे अन्कित के पास नंगी छोड़ गया। सच बताउं तो अन्कित और मैं अपने इस पहली अदला बदली चुदाई के अनुभव से इतने उत्साहित हुए की दुश्यन्त और अमिता के घर से जाते ही फ़िर से चुदाइ में लग गये। बाद में दुश्यन्त ने बताया की उसने भी घर जाकर सारी रात अमिता को मेरे बिस्तर पर पटक कर खुब चोदा।

दुश्यन्त और अमिता के जाते ही अन्कित ने सबसे पहले मुझको अपने बाहों में लेकर खूब चूमा और मेरी दोनों चुचियों को दबाया, मसला और चुसा फिर मुझे अपनी गोद में नंगी ही उठा लिया और बिस्तर पर ले आया। बिस्तर पर ला कर अन्कित ने मुझे बिस्तर पर सुला दिया और खुद मेरे बगल में लेट कर मेरी चुचियों को दबाते हुए बोला,

"सरिता मेरी जान, मैं तुम्हे आज सारी रात जैसे तुम चाहोगी वैसे चोद कर पुरा मज़ा देना चाहता हुँ। बोलो आज रात मेरे साथ तुम अपनी चूत कैसे चुदवाना चाहती हो?" मैं भी अन्कित के मुँह से अपनी एक चुची लगाते हुए बोली, "तो फ़िर मैं जैसे कहुँ वैसे मुझे धीरे धीरे चोद कर सारी रात मुझे और मेरी चूत को मज़ा दो।" अन्कित ने पुछ, "तो बताओ मैं क्या करुं। जो तुम बताओगी वही मैं करुंगा"।

मैंने अन्कित से अपने ऊपर नंगे लेट कर पहले मेरा सारा नंगा बदन चूमने और चाटने के लिये कहा। अन्कित झट मेरे ऊपर चढ़ कर मेरे नंगे बदन को सर से पैर तक चूमने लगा। पहले उसने मेरे होठों को खुब चूमा, फ़िर मेरी चुचियों को खुब चुसा, उसके बाद मेरे पैर से मेरी जांघों तक मेरे बदन को खुब चूमा और चाटा। अन्कित ने मेरे पेट को, मेरी नाभी को, मेरी चूत के उपर के उभरे हुए त्रिकोण को जी भर के चाटते हुए, मेरी जांघों, और मेरे पैरों को खूब चाटा।

मुझे अन्कित का इस तरह से चूमना और चाटना बहुत अच्छा लग रहा था और अन्कित भी बहुत मन लगा करके मेरे सारे के सारे बदन को चूम रहा था और चाट रहा था। इतनी सारी चुम्मा-चाटी के बाद भी अभी तक अन्कित ने मेरी चूत के अन्दर अपनी जीभ नही घुसेड़ी थी। अब मेरी चूत के अन्दर चीटीयाँ रेंगनी चालु हो गयीं।

फिर भी उसके बाद मैं उलटी पेट के बल लेट गइ और अन्कित से फिर अपने सारे बदन को पीछे से चाटने को कहा। अन्कित फिर मेरी गर्दन को, मेरी पीठ को, और मेरे पैरों को चाटने लगा।

अब मैंने अन्कित से मेरे चूतड़ों को चाटने को कहा। अन्कित ने जी भर के मेरे चूतड़ों को अपने हाथ से फैला कर, उनके अन्दर अपनी जीभ डाल कर खुब चूमा और चाटा। फ़िर मैंने अन्कित को पीछे से मेरी चूत के आस पास चूमने को कहा। फ़िर मैंने अन्कित को अपनी जीभ से मेरी चूत को धीरे धीरे चाटने को कहा। अन्कित बड़े आराम से मेरी चूत चाटने लगा। थोड़ी देर चूत चटवाने के बाद मेरी चूत पानी छोड़ दी और मैंने अन्कित को अपनी बाहों में जकड़ लिया। इसके बाद मैंने अन्कित को मेरे ऊपर चढ़ कर अपना लंड मेरे मुँह के अन्दर डालने को कहा। अन्कित ने अपना लंड मेरे मुँह में घुसेड़ दिया और मैं अन्कित का लंड बड़े आराम से अपने हाथों से पकड़ कर चुसने लगी।

मैं जैसे जैसे अन्कित का लंड चाट और चूस रही थी वैसे वैसे उसका लंड अकड़ना शुरु हो गया और अन्कित अपने हाथों से मेरी चुचियों को जोर जोर से मसलने लगा। थोड़ी देर में ही मेरे चुसने से अन्कित का लंड तन कर खड़ा हो गया। जब अन्कित का लंड पुरा का पुरा तन गया तो उसने मुझसे कहा, "अरे मेरे लंड की रानी, अब तो छोड़ दे मेरे लंड को। मुझे अब तुम्हारी चूत में अपना लंड पेलना है और तुम्हे चोदना है। देख मेरा लंड अकड़ कर कैसे खड़ा है। यह अब तुम्हारी चूत में घुसना चाहता है। चल अब चूत चुदवाने के लिये तैयार हो जा।" अन्कित की बात सुन कर मैं अन्कित का लंड अपने मुँह से निकाल कर अन्कित से बोली,

"हाय मेरी चूत के राजा, जैसे तुम्हारा लंड तन कर खड़ा हुआ है, वैसे मेरी चूत भी लंड खाने के लिये अपनी लार छोड़ रही है। मेरी चूत बहुत गीली हो गयी है और अब मैं भी तुमसे अपनी चूत चुदवाना चाहती हुँ। चलो अब जल्दी से अपना यह मोटा सा डन्डा मेरी चूत में घुसेड़ो और चूत को चोद चोद कर फाड़ दो।"

अन्कित मेरी बातों को सुन कर मेरे ऊपर से नीचे उतर गया और मेरी टांगों के बीच बैठ गया। टांगों के बीच बैठने के बाद अन्कित ने मेरी टांगों को अपने हाथों से खोल

कर मेरी चूत को खोला और अपना लंड मेरी चूत के दरवाजे पर रख कर एक धक्के से पुरा का पुरा लंड चूत के अन्दर घुसेड़ दिया। मैंने भी अपनी टांगों को जितना हो सके खोल कर अन्कित का लंड अपनी चूत में ले लिया, लेकिन अन्कित के धक्के के साथ साथ मेरे मुँह से एक हल्की सी चीख निकल गयी। अन्कित ने मेरी चीख सुन कर के पुछा,

"क्या हुआ, सरिता तुम्हारी चुदी चुदाइ चूत क्या फिर से फट गयी? अरे अभी तो सिर्फ़ लंड चूत के अन्दर डाला है, अभी तो पुरी चुदाइ बाकी है और तुम अभी से चीख रही हो?" मैं अन्कित की बातों को सुन कर बोली, "साले हरामी चूत के पिस्सु, ऐसे धक्का मारा जाता है? अबे यह तेरी बीवी की चूत नही है, कि जैसे मर्जी चोद लेगा। साले आराम से चोद।" फिर मैं अन्कित से प्यार से बोली, "अन्कित , ऐसे नहीं, धीरे धीरे, अपने लंड को मेरी चूत से पुरा बाहर निकाले बिना, हल्के हल्के धक्के मार कर, जी भर के सारी रात चोद कर मुझे मज़ा दो। ऐसे जल्दी जल्दी से चोदने से क्या फ़ायदा? तुम जल्दी झड़ जाओगे और मुझे भी मज़ा नही मिलेगा।" अब अन्कित मुझे धीरे धीरे चोदने लगा। थोड़ी देर तक धीरे धीरे चोदने के बाद अन्कित ने मेरी टांगें पकड़ कर उपर फैला लीं और अपने लंड को मेरी चूत से पहले आधा निकालता फिर उसको मेरी चूत के अन्दर घुसेड़ देता। मुझे इस धीमी चुदाइ से बहुत मज़ा मिल रहा था।

मैं अन्कित के कमर को अपने पैरों से पकड़ कर उसको अपनी चुचियों से चिपका लिया और अपनी कमर उठा उठा कर अन्कित का लंड अपनी चूत में पिलवाने लगी। अन्कित की इस धीमी चुदाइ से मेरी चूत अब तक तीन बार पानी छोड़ चुकी थी, लेकिन चूत और चुदना चाहती थी। थोड़ी देर अन्कित मुझे धीरे धीरे चोदने के बाद मुझसे बोला, "मेरी रानी, अब बहुत गया है। अब मुझे जोर जोर से चोदने दो। वैसे अमिता को मैं तो रोज़ जोर जोर से चोदता हुँ और अमिता भी चुदते चुदते जोर जोर से चोदने के लिये बोलती है। अब तुम अपनी चूत सम्भालो और मैं तेज़ी तेज़ी तुम्हे चोदता हुँ।" इतना कहने के बाद अन्कित ने मेरी दोनों चुचियों को अपने हाथों से कस कर पकड़ लिया और अपनी कमर तेज़ी से उठा उठा कर मुझे चोदने लगा। अब मैं भी बहुत गरम हो गयी थी और मैंने भी अन्कित को अपने दोनों हाथों और दोनों पैरों से पकड़ कर उससे चिपक कर अन्कित की चुदाइ का मज़ा लेने लगी। थोड़ी देर

मेरी चूत में लंड तेज़ी से पेलने का बाद अन्कित का लंड मेरी चूत के अन्दर धक्का मारने लगा और मैं समझ गयी की अब अन्कित झड़ने वाला है।

वैसे मैं भी अब झड़ने वाली थी। मैंने अन्कित का मुँह खींच कर अपनी चुचियों पर सटाते हुए अन्कित से कहा, "अन्कित , जल्दी से तुम मेरी चुची चुसते हुए मुझे चोदो, मैं भी अब झड़ने वाली हुँ। चुची चुसवाते चुदने से मैं बहुत जल्दी झड़ुंगी।" अन्कित ने झट से मेरी एक चुची को अपने मुँह में ले लिया और चुसने लगा।

मैं भी अपनी चुतड़ उचका उचका कर अन्कित के लंड से चुदवाने लगी। थोड़ी देर में अन्कित अपना लंड तेज़ी से मेरी चूत में अन्दर तक पेल कर चुप हो गया और मेरी चूत को अपने पानी से भर दिया। मैं भी उसी समय अपनी चूत का पानी अन्कित के लंड के ऊपर छोड़ दी। हम लोग इस चुदाइ से बहुत ही थक गये थे और बिना चूत से लंड निकाले एक दुसरे को अपने से चिपका कर सो गये।

सुबह जब आँख खुली तो देखा की अन्कित मेरे बगल में नंग धड़ंग सो रहा है और मैं भी बिल्कुल नंगी हुँ। पहले तो मैं चौंक गयी फिर बाद में कल रात की सारी की सारी घटना याद आयी और मैं एक बार के लिये शर्मा गयी। फिर मैंने गौर से अन्कित को देखा। सुबह होने के नाते उसका लंड फिर से खड़ा हो कर हवा में झूम रहा था। उस समय अन्कित के लंड का सुपाड़ा पुरी तरह से खुला हुआ था और बिल्कुल टमाटर की तरह लाल था।

मैं अन्कित के लंड का ऐसा नज़ारा देख कर अपने आप को रोक नही पायी और बैठ कर उसके लंड को अपने हाथों से पकड़ अपने मुँह से लगा लिया। मुँह से लगाते ही अन्कित का लंड और भी अकड़ गया। मुझे अन्कित के लंड से अपनी चूत की महक आ रही थी। मैंने अन्कित का लंड अपने मुँह में भर लिया और उसे चुसने लगी। अन्कित की आँख खुल गयी और उसने अपने हाथों से मुझे जकड़ लिया और मुझे अपने ऊपर खींच कर मुझे बेतहासा चूमने लगा। थोड़ी देर चूमने के बाद अन्कित मेरी नंगी चुचियों से खेलने लगा और उन्हे चुसने लगा फिर अन्कित ने मुझसे कहा,

"रानी, मुझे तुम्हारा यह नींद से जगाने का अन्दाज़ बहुत पसन्द आया। चलो अब

हम तुम 69 position में एक दुसरे की चूत और लंड चुसते हैं।" मैं झट बिस्तर पर फिर से लेट गयी और अन्कित उठ कर मेरे पैरों की तरफ़ अपना सर करके लेट गया। पहले अन्कित मेरी चूत से थोड़ा खेला और फिर उपर चढ़ कर मेरी चूत चाटने लगा। मैं भी अन्कित का लंड अपने हाथों से पकड़ कर चुसने लगी। थोड़ी देर तक मैं और अन्कित एक दुसरे का लंड और चूत चाटते और चुसते रहे। फिर वो मेरे ऊपर से उठ गया और मुझे अपने पेट के बल लेटने के लिये बोला। मैंने फौरन अन्कित से पुछा,

"क्यों? सुबह सुबह गांड मारने का इरादा है क्या?" अन्कित तब अपने हाथों से मुझे उलटी लेटाते हुए बोला, "नहीं, अभी मैं तुमको कुतिया बना कर पीछे से चोदुंगा और तुम एक कुतिया की तरह अपनी गांड हिला हिला कर मेरा लंड अपनी चूत में पीछे से पिलवाओगी।"

मैं तब बिस्तर पर चढ़ अपने हाथों और पैरों के सहारे कुतिया की तरह हो गयी और अन्कित झट से उठ कर मेरे पीछे बैठ गया और पीछे से मेरे चुतड़ों को चाटने लगा और थोड़ी देर के बाद मेरी चूत को भी चाटना और चुसना शुरु कर दिया। तब अन्कित ने मुझसे कहा, "क्यों मेरी चुद्दकड़ सरिता रानी, तुम्हे अपनी गांड मरवाने की बहुत जल्दी पड़ी हुई है। अभी तो मैं तेरी चूत को चोद चोद करके उसको चौड़ी करुंगा और फिर नाश्ता करने के बाद तेरी गांड में अपना लंड घुसेड़ कर तेरी गांड क छेद चौड़ा करुंगा। अन्कित की बातों को सुन कर मैं अन्कित से बोली, "मेरी चूत और गांड की बातों को छोड़, तुम अपनी बीवी की चूत और गांड की चिन्ता करो अन्कित। मेरा पति अब तक तुम्हारी बीवी की चूत और गांड चोद चोद कर उसके दोनों छेद चौड़े कर दिये होंगे। तुम्हे शायद नही मालुम की दुश्यन्त को औरतों की गांड मारने का बहुत शौक है और अब तक वो अपना लंड कम से कम दो तीन बार अमिता की गांड में डाल चुका होगा।" अन्कित मेरी बातों को सुन कर बोला, "कोइ बात नहीं, दुश्यन्त अगर अमिता की चूत और गांड के छेद चौड़े कर रहा है तो मैं भी तुम्हारी चूत और गांड के छेद बड़े कर दुंगा।" फिर थोड़ी देर के बाद अन्कित मेरे पीछे से मेरे ऊपर चढ़ गया और उसने अपना लंड मेरी चूत से भिड़ा कर एक हल्का सा धक्का मारा और उसका सुपाड़ा मेरी चूत में समा गया। मैंने तब अपने बिस्तर की चद्दर को पकड़ कर अपनी कमर को पीछे की तरफ़ धकेला और अन्कित का पुरा लंड मेरी चूत में समा गया।

अब अन्कित ने मेरी कमर को पकड़ कर अपनी कमर चला करके मुझे चोदना शुरु कर दिया। इस आसन में अन्कित का लंड मेरी चूत की बहुत गहराई तक पहुँच रहा था और मुझे भी मज़ा मिल रहा था। अन्कित ने तब अपने दोनों हाथों को नीचे से बढ़ा कर मेरी दोनों चुचियों को, जो कि हवा में झुल रही थीं, पकड़ लिया और मसलने लगा। थोड़ी देर तक मेरी चुचियों से खेलने के बाद अन्कित मेरी चूत की घुन्डी से खेलने लगा और इसी तरह से वो मुझे चोदता रहा। थोड़ी देर के बाद अन्कित ने चूत में अपने लंड का पानी छोड़ दिया और मेरी चूत को भर दिया।

मैं भी अन्कित के साथ साथ झड़ गयी और बिस्तर पर औंधी लेट कर सुस्ताने लगी। अन्कित भी मेरी पीठ पर पड़ा पड़ा सुस्ताने लगा। थोड़ी देर सुस्ताने के बाद अन्कित मेरे ऊपर से हट गया और मैंने भी तब पलंग पर उठकर अपनी चूत को पहले चादर से पोंछा और फिर बाथरूम चली गयी। जब मैं बाथरूम से नहा धो कर निकली तो देखी कि अन्कित अपने लंड को पकड़ कर सहला रहा है और उसका लंड फिर से खड़ा हो गया है। मैं अन्कित से पुछी,

"क्या बात है? तुम्हारा हथियार फिर से खड़ा हो गया है। अभी उसको अपने यत्न से ही ठन्डा करो और मैं अभी चाय नाश्ता बनाने जा रही हुँ।" अन्कित मेरी तरफ़ देखते हुए बोला, "अरे रानी तुम चीज़ ही ऐसी हो कि तुम्हारी याद आते ही यह लंड खड़ा हो जाता है। तुम्हारी चूत बिल्कुल मक्खन मलाइ जैसी है। जी करता है उसको मैं हमेशा चूमुं, चाटूं और चोदुं। ठीक है अभी तुम चाय नाश्ता बनाओ और मैं भी बाथरूम जा रहा हुँ।

लेकिन चाय नाश्ते के बाद मैं तुम्हारी गांड मारुंगा। लोग कहते हैं किसी औरत की चुदाइ तब तक पुरी नही होती जब तक उसकी गांड में लंड न पेला जाये। इसीलिये मैं अभी नाश्ता करने के बाद तुम्हारी गांड में अपना लंड पेलुंगा।" इतना कह कर अन्कित बाथरूम चल गया और मैं नाश्ता बनाने किचन में चली आयी। किचन में सबसे पहले नाश्ता बनायी और चाय बनायी। जब तक मैं चाय नाश्ता बना रही थी कि अन्कित बाथरूम से नहा धो कर बिल्कुल नंगा निकल आया और मुझसे कहने लगा,

"सरिता, चलो अब तुम भी नंगी हो जाओ। हम लोग नंगे नंगे बिस्तर पर बैठ कर चाय नाश्ता करेंगे।" अन्कित की बात सुन कर मैं भी अपने सारे कपड़े उतार और नंगी ही किचन में जाकर चाय नाश्ता लेकर आके बिस्तर पर बैठ गयी। अन्कित मेरे साथ साथ मेरे बगल में बैठ गया। अन्कित मेरे बगल में बैठ कर मेरी चुचियों से खेलना चालु हो गया। मैंने उसके हाथों को हटाते हुए उसको चाय नाश्ता दिया और जल्दी से चाय नाश्ता खतम करने के लिये बोली। अन्कित ने मुझसे पुछा,

"क्यों जल्दी क्यों? क्या तुम्हे अपनी गांड में मेरा लंड पिलवाने की बहुत जल्दी है क्या?" मैंने उसको कहा, "नहीं, मुझे जल्दी है क्योंकि अभी एक घन्टे में कामवाली आ जायेगी। एक घन्टे में चाय नाश्ता खतम करना है हमलोगों को फिर से कपड़े पहनने हैं। समझे मेरे चोदु राजा?" अन्कित मेरी बातों को सुन कर चुप चाप नाश्ता करने लगा। फिर हम लोगों ने चाय पी और फिर सारे बर्तन किचन में रख कर वापस अन्कित के पास bedroom में गयी। अन्कित मुझसे बोला,

"सरिता, मैं तो सोच रहा था की मैं अभी तुम्हारी गांड मारुंगा, लेकिन अभी तो ये कामवाली बाइ आने वाली है। चलो पहले हमलोग कपड़े पहन लेते हैं और अगर टाईम हुआ तो कुछ करते हैं।" मैंने अन्कित से पुछा, "कुछ का मतलब? अभी कल रात से हमलोग चुदाइ कर रहे हैं अब और क्या बचा है करने के लिये?" अन्कित ने तब मेरी चुचियों को पकड़ कर धीरे धीरे दबाते हुए कहा, "अरे मेरी जान, अभी तुम्हारी चूत से और गांड से मेरे लंड की दोस्ती बढ़ानी है। तभी तो बाद में मतलब और किसी दिन जब मौका मिलेगा तुम्हे और रगड़ कर चोदना है। अच्छा चलो अपने कपड़े पहन लो और फिर बिस्तर पर अपनी साड़ी उठा कर लेट जाओ, मुझे तुम्हारी चूत का रस पीना है।"

मैंने अन्कित की बात सुन जल्दी से अपनी साड़ी, पेटिकोट, ब्रा और ब्लाउज़ पहन लिया और फिर वापस बिस्तर पर अपने कपड़े उठा कर लेट गयी। अन्कित भी अब तक अपने कपड़े पहन चुका था। वो मेरे पास आया और मेरी चूत को चूमने लगा। थोड़ा चूत को चूमने के बाद अन्कित अपनी जीभ मेरी चूत पर फिराने लगा और फिर जीभ को मेरी चूत में डाल दिया। अन्कित अब जीभ से मेरी चूत बुरी तरह से चाटने

और चुसने लगा। मेरी चूत भी तेज़ी से पानी छोड़ने लगी और अन्कित भी तेज़ी से चाट चाट कर मेरी चूत का रस पीने लगा।

चूत की चुसाइ से मैं इतना गरम हो गयी कि मैं अपने आप अपनी दोनों टांगों को घुटने से पकड़ लिया और अपनी कमर उचका कर अपनी चूत अन्कित के मुँह से रगड़ने लगी। अन्कित भी अपने दोनों हाथों से मेरी दोनों चुचियों को ब्लाउज़ के ऊपर से पकड़ कर रगड़ने लगा। इतने में calling bell बजी और मैं और अन्कित जल्दी से एक दुसरे को छोड़ कर अपने कपड़े ठीक किये और मैं बाहर का दरवाजा खोलने चली गयी। बाहर कामवाली बाइ आयी हुई थी। कामवाली अन्दर आयी और अपने काम पर लग गयी। थोड़ी देर के बाद कामवाली अपना काम खतम करके चली गयी और जाते जाते अन्कित पर अपनी गहरी नज़रों से देखती रही।

कामवाली बाइ के जाते ही अन्कित ने मुझे पकड़ लिया और एक झटके के साथ मेरे सब कपड़े फिर से उतार दिये और मुझको अपने साथ bedroom में लाकर बिस्तर पर लेटा दिया। फिर अन्कित ने जल्दी से अपने कपड़े उतार कर मेरे बगल में लेट गया। लेटने के बाद अन्कित एक हाथ से मेरी चुची और दुसरे हाथ से मेरी चूत को सहलाने लगा। थोड़ी देर के बाद अन्कित ने मुझे उलटा लिटा दिया और मेरे चुतड़ों पर अपना मुँह रगड़ने लगा। फिर वो बिस्तर पर से उठ कर dressing table से cold cream की बोतल ले आया और क्रीम मेरी गांड के छेद में मलने लगा।

अब तक मैं चुप थी मगर अब मैंने पुछा, "क्या कर रहे हो और क्या इरादा है? क्यों मेरी cold cream खराब कर रहे हो। क्रीम मुँह पर लगायी जाती है और तुम क्रीम मेरी गांड में लगा रहे हो।" अन्कित मेरी गांड में क्रीम लगाते हुए बोला, "मेरी चुद्दकड़ रानी, अब मैं तुम्हारी गांड में अपना लंड पेलुंगा और अभी उसीकी तैयारी कर रहा हुँ। क्रीम लगाने से तुम्हारी गांड नही छिलेगी।"

मैंने तब अपने हाथों से अपने चुतड़ों को फ़ैलाते हुए अन्कित से कहा, "अन्कित मेरे चोदु राजा, मुझे गांड मरवाने की आदत है, क्योंकि दुश्यन्त अक्सर मेरी गांड में अपना लंड पेलता है और चोदता है, इसलिये तुम्हारे लंड घुसाने से मेरी गांड अब नही फटेगी। लो अब मैंने अपनी गांड खोल दी है और अब तुम अपना लंड डालो मेरी

गांड में और मेरी गांड मारो।"

मेरी बातों को सुन कर अन्कित हंस पड़ा और बोला, सरिता मैं तो तुम्हे एक चुद्दकड़ औरत समझ रहा था लेकिन तु तो गांडु भी है। चलो अब मैं तुम्हारी गांड मारता हुँ।" इतना कहकर अन्कित ने अपन लंड मेरी गांड में एक झटके से डाल दिया और मेरी गांड चोदने लगा। मैं भी अपनी कमर को झटके के साथ आगे पीछे करके अन्कित का लंड अपनी गांड में मज़े से पिलवाने लगी। थोड़ी देर में अन्कित मेरी गांड के अन्दर झड़ गया और अपना लंड मेरी गांड से निकाल कर बाथरूम में चला गया।

मैं भी बिस्तर की चादर से अपनी गांड को पोंछ कर किचन में चली गयी। किचन में मैं खाना बना कर जब बाहर निकली तो देखा कि अन्कित नहाने के बाद नंगा ही जाकर बिस्तर पर सो गया है और उसका सोया हुआ लंड दोनों पैरों के बीच सुस्त पड़ा हुआ है। एक बार तो मैं अन्कित का लंड देख कर मचल गयी लेकिन मैंने अपने आप को रोक लिया क्योंकि कल रात से अन्कित बहुत ज्यादा मेहनत कर चुका है और मेरी चूत और गांड भी चुदते चुदते कल्ला रही है। मैं अन्कित को छोड़ कर अपने कमरे में गयी और थोड़ी देर में नहा धो कर किचन में जाकर अपने और अन्कित के लिये खाना लगया और तब जाकर मैंने अन्कित को जगाया।

अन्कित उठ कर खाना खाने के बाद फिर मुझे बिस्तर पर ले कर मुझसे लिपट कर सो गया और मैं भी अन्कित के बाहों में सो गयी। रात में एक बार मैं पेशाब करने के लिये उठी तो देखा कि अन्कित मेरे बगल में नंगा लेटा हुआ है और उसका एक हाथ मेरी चुची पर है। मैंने धीरे से अन्कित का हाथ अपनी चुची पर से हटाया और नंगी ही बाथरूम चली गयी।

बाथरूम से जब लौटी तो देखी कि अन्कित की आँख भी खुली हुई है और वो अपने हाथों से अपना लंड मसल रहा है। जैसे ही मैं अन्कित के बगल फिर से लेटी तो अन्कित ने मुझे फिर से अपनी बाहों में जकड़ लिया और हमलोग एक बार फिर से जोर दार चुदाइ कर के सो गये। सुबह अमिता का फोन आया कि अन्कित और मैं lunch पर मेरे घर दुश्यन्त और अमिता से मिलें।

मैं और अन्कित मेरे घर गये, वहां पर अमिता ने बड़ा अच्छा खाना बना कर रखा हुआ था। हम सब ने पहले थोड़ी drinks ली और फिर आराम से खाना खाया। खाने के बाद सब मेरे drawing room में आये और अपने अपने कपड़े निकाल दिये। मैं अन्कित की गोद में और अमिता दुश्यन्त की गोद में बैठ गये। दुश्यन्त और अन्कित फिर हम दोनों के नंगे शरीर से खेलने लगे। हम सब के हाथों में अपनी अपनी drinks थी।

तब अन्कित ने दुश्यन्त से पुछा, "दुश्यन्त , तुम्हे अमिता के साथ अकेले कैसा लगा।" दुश्यन्त ने कहा,"अमिता को अकेले चोदने में तो मज़ा आ गया अन्कित , पर जानते हो कि कल जिस चीज़ ने मुझे सबसे ज्यादा उत्तेजित किया वो था अपनी आँखों के सामने सरिता को तुम से चुदवाते हुए देखना। वाकइ तुम्हारे लम्बे लंड को सरिता की चूत में बार बार अन्दर बाहर जाते हुए देख कर मज़ा आ गया।"

अन्कित बोला, "मुझे भी कल रात सरिता को अकेले चोदने में बड़ा मज़ा आया। पर दुश्यन्त , सच कहो तो मुझे भी तुम को अपने सामने अमिता को चोदते देख कर, और साथ साथ सरिता को तुम्हारे और अमिता के सामने उसी बिस्तर पर चोद कर जो मज़ा आया वह मैं बता नही सकता।" बाद में दुश्यन्त ने बताया की उसने भी अमिता को घर ले जा कर रात भर उसको पुरा मज़ा दिया।

अमिता को अपने घर ले जाने के बाद दुश्यन्त नंगे हो कर बिस्तर पर लेट गया। फ़िर उसने अमिता से उसे जी भर के मज़ा देने को कहा। अमिता भी नंगी हो कर बिस्तर पर आइ और दुश्यन्त का लंड अपने हाथ में लेकर चुसने लगी। फ़िर दुश्यन्त ने अमिता को अपने उपर उलटा लेट कर अपनी चूत को दुश्यन्त के मुंह के उपर रखने को कहा। अमिता दुश्यन्त के उपर उलटा लेट गइ, दुश्यन्त अमिता की चूत को और अमिता दुश्यन्त के लंड को चुसने लगे। दुश्यन्त की आँखों के सामने अमिता के गोरे गोरे चूतड़ नज़र आ रहे थे और दुश्यन्त को अमिता की चूत और गुलाबी गांड साफ़ दिखाइ दे रही थी।

दुश्यन्त अमिता के दोनों चूतड़ों को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर सहलाने लगा और अपनी जीभ से अमिता की चूत चाटने लगा। चूत चाटते चाटते दुश्यन्त की जबान

अमिता की गांड पर चली गइ और दुश्यन्त अमिता की गुलबी गांड को अपनी जीभ से चाटने लगा। फिर उसके बाद दुश्यन्त अपनी जीभ को बारी बारी से अमिता की चूत और गांड के अन्दर बाहर कर के अमिता की चूत और गांड दोनों को अपनी जीभ से चोदने लगा।

इधर अमिता दुश्यन्त का लंड बड़े आराम से चुस रही थी और थोड़ी देर में ही दुश्यन्त का लंड तन्न कर खड़ा हो गया। अमिता भी दुश्यन्त की जीभ से अपनी चूत और गांड दोनों को चुदवा कर अब दुश्यन्त के लंड से चुदाइ करवाने के लिये उत्तेजित हो चुकी थी।

तब दुश्यन्त ने अमिता को अपने उपर चढ़ कर उसके लंड को अपनी चूत में डाल कर उपर से चोदने को कहा। अमिता दुश्यन्त के उपर चढ़ गइ, और उसके लंड को अपनी चूत में डाल कर धीरे धीरे धक्के लगा कर चोदने लगी। थोड़ी देर इस तरह से अमिता ने दुश्यन्त को उपर से चोदा। फिर दुश्यन्त ने कहा, "अमिता, मुझे तुम्हारे चूतड़ बहुत अच्छे लगते हैं, और अगर तुम सचमुच मुझे मज़ा देना चाहती हो तो आज मैं तुम्हारी गांड मार कर मज़ा लेना चाहता हुँ।"

अमिता बोली,"दुश्यन्त , आज तुम जो चाहो वो मज़ा मेरे साथ ले सकते हो। मैंने अन्कित के साथ एक दो बार गांड मरवाइ है पर तुम्हारा लंड तो बहुत मोटा है अन्दर कैसे जायेगा।" दुश्यन्त ने कहा, "रानी, इसकी चिन्ता मुझ पर छोड़ दो। पहले मैं तुम्हारी गांड को अपनी जीभ से चाट कर गीली कर दुंगा, फ़िर अपना लंड उसमे घुसेड़ कर आराम से मैं तुम्हारी गांड मारुंगा।" अमिता ने कहा ठीक है, और बिस्तर पर घोड़ी की तरह अपनी गांड उपर कर के लेट गइ। दुश्यन्त ने अमिता की गांड खोल कर अपनी जीभ अमिता की गांड के छेद पर लगा कर उसको चाटने लगा।

थोड़ी देर अमिता की गांड को चाट कर दुश्यन्त ने उसे खुब गीली कर दिया और फिर अमिता से अपने लंड को एक बार और चुस कर गीला करने को कहा। अमिता ने दुश्यन्त के लंड को थोड़ा चाट कर और अपना थूक लगा कर खुब गीला कर दिया। पर दुश्यन्त अमिता की गांड मारने से पहले थोड़ी देर उसकी चूत चोदना चाहता था और दुश्यन्त ने अपने लंड को अमिता की चूत में लगा कर एक ही धक्के में पूरा लंड

उसकी चूत के अन्दर घुसा दिया। ऐसे थोड़ी देर तक दुश्यन्त ने अमिता की चूत को चोदा। चूत में जाने से दुश्यन्त का लंड और भी गीला हो गया।

फिर दुश्यन्त ने अपने लंड को पकड़ कर अमिता की गांड के छेद पर लगाया और एक ही धक्के में आधा लंड अन्दर घुसेड़ दिया। दुश्यन्त ने एक धक्का और दिया और बड़े आराम से दुश्यन्त का लंड अमिता की गांड में पुरा चला गया। दुश्यन्त का लंड मोटा जरुर था पर अमिता की गांड भी खुब गीली हो चुकी थी और अमिता को अपनी गांड में दुश्यन्त का पुरा लंड लेने में कोइ परेशानी नही हुइ।

फिर दुश्यन्त ने अमिता के दोनों चूतड़ों को अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और उसकी गांड में अपना लंड धीरे धीरे अन्दर बाहर कर के चोदने लगा। इस तरह से दुश्यन्त ने अमिता की गांड को जी भर के मारा और फिर उसके गोरे गोरे चूतड़ों पर अपना पानी निकाल दिया। अमिता पुरी तरह से दुश्यन्त की चुदाइ से खुश होकर बिस्तर पर पीठ के बल लेट गइ। दुश्यन्त ने अपने पानी को तौलिये से पोंछ कर अमिता के चूतड़ों को साफ़ किया और फिर अमिता के उपर ही नंगा लेट कर उसको अपनी बाहों में ले कर सो गया।

दुश्यन्त ने कहा, "अन्कित, हमारी बीवीयों की पहली अदला बदली चुदाइ बड़ी जल्दबाजी में हुइ थी, अगर तुम बुरा न मानो तो मैं एक बार फ़िर तुम्हे सरिता को चोदते हुए देखना चाहता हुँ।" अन्कित बोला, "मैं भी अमिता को एक बार फ़िर तुमसे चुदवाते हुए देखना चाहता हुँ।" इन बातों से दोनों के लंड दोबारा तन्ना गये। दुश्यन्त ने bedroom में चलने की सलाह दी और कहा कि वहीं पर हम एक दुसरे की बीवीयों को चोदेंगे।

हम अपनी drink लेकर bedroom में आ गये और उसी बिस्तर पर नंगे ही बैठ कर चुस्कियाँ लेने लगे। कमरे में रोशनी पुरी थी। दुश्यन्त ने अन्कित से पहले मुझे चोदने को कहा। मैंने दुश्यन्त से मुझे चुदाइ के लिये तैयार करने के लिये मेरी चूत चाटने को कहा। दुश्यन्त ने फ़ौरन मेरी इच्छा का सम्मान किया और मेरी चूत बड़े प्यार से चाटने लगा। साथ ही अमिता भी अन्कित को उसका लंड चुस कर उसे भी तैयार करने लगी। मैं बिस्तर पर अपनी दोनों जाँघें फ़ैलाकर लेट गइ।

मेरी सपाट चिकनी खुली चूत अन्कित के लम्बे लौड़े का आघात सहने को अब पनिया चुकी थी। अन्कित मेरे उपर आ गया और अपने लंड को मेरी चूत के मुँहाने पर लगा दिया। तब मैंने अमिता से कहा कि अगर वोह बुरा न माने तो क्या वो अपने हाथों से अन्कित के लंड को मेरी चूत में डाल सकती है। अमिता सहर्ष तैयार हो गइ और अपने पति के लंड को अपने हाथ में लेकर मेरी चूत में डाल दिया। अन्कित ने मुझे चोदना शुरु कर दिया। अमिता और मेरे पति हमारे पास ही बैठ कर अन्कित के लम्बे लंड को मेरी चूत की सैर करने के दृष्य का आनंद उठाने लगे।

उन दोनों ने मेरा हाथ थाम लिया और मेरे पुरे शरीर और मेरी चुचियों को सहलाने लगे। मैं अपने हाथों से अमिता की चुचियों और दुश्यन्त के लंड को भी सहलाने लगी। अन्कित इस सबसे जैसे बेखबर होकर बेरोकटोक मेरी चूत की चुदाइ में लगा रहा। अन्कित मुझे लग-भग २५-३० मिनट तक जोर जोर से चोदता रहा और मेरे पेट पर अपना पानी निकाल दिया। अमिता ने उसका रस मेरे पेट से बड़े चाव के साथ चाट चाट कर साफ़ कर दिया। मेरे पति ने मुझे एक प्यारी मुस्कान के साथ मेरी चूत को एक प्यार भरी चुम्मी दी।

मैंने भी उसका लंड दबाकर उसके होठों पर चुम्मी देकर बड़े प्यार से उसको धन्यवाद किया। अब अमिता की बारी थी। वो बिस्तर पर लेट गइ। अन्कित ने उसकी चूत चाट कर उसे तैयार किया और मैंने दुश्यन्त का लंड चुस कर उसे अमिता को चोदने के लिये तैयार किया। अमिता ने भी मुझसे अपने पति का लंड उसकी चूत में डालने की फ़र्माइश की जो मैंने खुशी से पुरी कर दी।

मेरे पति ने हमारे सामने अमिता की चुदाइ शुरु कर दी। अन्कित और मैं उन दोनों के पास ही बैठ गये और उनके खेल का आनंद उठाने लगे। अन्कित ने और मैंने अमिता के हाथ थाम लिये और उसके जिस्म, सिर, चुचियों और पेट को प्यार से सहलाने लगे। अमिता भी मेरी चुचियों और अन्कित के लंड से खेलने लगी, और दुश्यन्त बेधड़क उसकी चुदाइ किये जा रहा था। वाह, क्या scene था। दुश्यन्त की अमिता के साथ १५-२० मिनट की घनघोर चुदाइ के बाद अन्कित बोला,

"दुश्यन्त अब मैं तुम्हे अमिता की गांड मारते हुए देखना चाहता हुँ।" दुश्यन्त ने कहा ठीक है, और अमिता से घोड़ी वाले आसन में बिस्तर पर लेट जाने को कहा। अमिता उकडु होकर बिस्तर पर लेट गइ और अन्कित ने अपने दोनों हाथों से उसके दोनों चूतड़ों को फैला कर दुश्यन्त के सामने अमिता की गांड खोल दी। फिर मैंने दुश्यन्त के लंड को अपने हाथ में पकड़ कर अमिता की गांड में लगा दिया।

दुश्यन्त ने एक जोर का धक्का लगया और एक ही बार में अपना लंड अमिता की गांड में घुसा कर जल्दी जल्दी अन्दर बाहर करके चोदने लगा। अमिता को भी दुश्यन्त से अपनी गांड मरवा कर बड़ा मज़ा आ रहा था। इस तरह से दुश्यन्त ने मेरे और अन्कित के सामने १५-२० मिनट तक खुब जोर जोर से अमिता की गांड को चोदा, और फिर अपना रस अमिता के गोरे गोरे बड़े बड़े चूतड़ों पर बरसा दिया। फिर मैंने भी अमिता की तरह ही उसके चूतड़ों को चाट चाट कर साफ़ कर दिया।

इस तरह से दोनों जोड़ों ने एक दुसरे के जीवन साथी के जिस्म का खुल कर खुब आनंद लिया। अपने अपने जीवन साथी को एक दुसरे के जीवन साथी के साथ आमने सामने बहुत पास से चुदवाते हुए देखने का आनंद उठाया। उस दिन हम चारों को बीवीयों को अदल बदल कर चुदाइ में खुब मज़ा आया। उसके बाद हम लोगों ने फ़िर थोड़ा विश्राम किया, कुछ खाया पिया, कुछ देर ऐसे ही छुट पुट बातें कीं। बाद में हमने ये निर्णय किया कि रात में अन्कित और दुश्यन्त दोनों एक साथ अमिता को और फ़िर दोनों मुझे एक साथ चोदेंगे।

अमिता और मैंने मिल कर दुश्यन्त और अन्कित को उनके लंड चुस कर अपने दोनों के लिये तैयार किया। उसके बाद दुश्यन्त और अन्कित ने मिल कर अमिता और फ़िर मुझे बारी बारी से चोदा। उन्होंने पहले मुझे चोदा जब अमिता उसी बिस्तर पर बैठकर मुझे चुदते देखती रही। अन्कित ने मुझे घोड़ी वाले आसन में चोदा, तब मैं दुश्यन्त का लंड चुसती रही। फ़िर मेरे देखते देखते उन दोनों ने अमिता की चुदाइ की। दुश्यन्त ने उसे चोदा और अमिता ने अपने पति का लंड चुसा। उसके बाद तो उन दोनों ने मुझे और अमिता को एक साथ बिस्तर पर लेट जाने को कहा और फ़िर वह दोनों हम दोनों को बारी बारी से चोदने लगे।

पहले अन्कित मुझे थोड़ी देर चोदता फिर जाकर अमिता को थोड़ी देर चोदता। इसी तरह दुश्यन्त ने पहले अमिता को थोड़ी देर चोदा फिर आकर मुझको थोड़ी देर चोदा। और फ़िर एक के बाद एक अन्कित और दुश्यन्त अदल बदल कर मुझे और अमिता को एक साथ सारी रात चोदते रहे जब तक कि दुश्यन्त अमिता के मखमली चिकने चूतड़ों पर और अन्कित मेरी नाभी के उपर न झड़ गया। उसके बाद हम सब ने अपनी पहली चौतरफ़ा चुदाई की ही बातें कीं।

हम सब को जिस बात ने सबसे ज्यादा रोमान्चित किया था वो ये नही था की हमने किसी और को चोदा था वरना कि एक ही बिस्तर पर चढ़ कर हमलोगों ने मिल कर एक साथ चुदाइ लीला की। अपने जीवन साथी को अपनी आँखों के सामने दुसरे को चोदते हुए देखने का भी एक अजीब रोमांच है जब कि खुद भी दुसरे के जीवन साथी के साथ उसी बिस्तर पर अपने जीवन साथी के सामने ही चुदाइ कर रहे हों।

अपने इस पहले अनुभव के पुर्व मुझे एहसास नही था कि मैं दुश्यन्त को किसी अन्य स्त्री को चोदते देख कर कैसा महसूस करुंगी। और मैं अपने आप को किस तरह से इस बात के लिये तैयर करुंगी की मैं दुश्यन्त के सामने किसी और आदमी से चुदवा सकुं। पहले तो मैं यही सोचती थी कि दुश्यन्त मुझे दुसरे मर्दों से इसीलिये चुदवाने दे रहा था ताकि वो उनकी बीवीयों को उन्मुक्त हो कर चोद सके। धीरे धीरे मैंने ये पाया कि दुसरे जोड़ों के साथ बीवी अदल बदल कर चुदाइ करने में वाकइ बड़ा आनंद आता है।

न कि केवल मुझे नये आदमियों से चुदवाने में बड़ा आनंद आने लगा बल्कि दुश्यन्त को दुसरी स्त्री को चोदते देख कर भी मुझे बड़ा मज़ा आने लगा। जब मेरा पति दुश्यन्त किसी औरत को बेरोक-टोक २०-३० मिनट तक लम्बे करारे धक्के मार कर अपने मोटे लंड से जोर जोर से चोदता है तो मुझे उस औरत के चेहरे पर चुदाइ का आनंद और वासना की संतुश्टी के सुंदर भाव देखने में बहुत मज़ा आता है।

दुश्यन्त भी इन औरतों को चोदने के साथ साथ मुझे अपने समने दुसरे आदमियों से चुदवाते हुए देख कर बहुत उत्तेजित होता है। हालाँकि पहले मैं काफ़ी संकोच करती थी पर अब मुझे लगता है कि अगर जीवन में चुदाइ का भरपुर मज़ा लेना हो तो

सामुहिक चुदाइ के अलावा और कोइ ऐसा तरीका नहीं है जिसमें कि पत्नी को गैर मर्दों से चुदवाने का मज़ा लेने के लिये अपने पति से कुछ छिपाना नही पड़ता है और उनका पति भी बिना अपनी पत्नी से कुछ छिपाए दुसारी औरतों को अपनी पत्नी के सामने बड़े आराम से चोद सकता है। न किसी से कोइ गिला, न शिकवा, न चोरी, न बेइमानी, सिर्फ़ असली चुदाइ का मज़ा साथ साथ एक दुसरे के आमने सामने।